अध्याय एक

सामान्य

जिले के नाम की उत्पत्ति

इस जिले का नामकरण सीतापुर मुख्यालय के नाम पर किया गया है किन्तु इसकी उत्पत्ति कैसे हुई यह आज भी रहस्य बना हुआ है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि यह नगर कब बसाया गया था। जनश्रुति यह है कि राम और उनकी पत्नी सीता ने उस स्थान पर, जहां आज सीतापुर बसा है, कुछ समय तक निवास किया था और बाद में राजा विक्रमादित्य ने उसी स्थान पर सीता की स्मृति में एक मंदिर बनवाया और उस स्थान का नाम सीतापुर (अर्थात सीता की नगरी) रखा। एक अन्य कथा के अनुसार वर्तमान नगर (मुसलमानों के आक्रमण के पश्चात्) कुछ राजपूतों द्वारा बसाया गया था, जो निरबंशी अथवा नन्दवंशी कहलाते थे, उनके वंशज अभी हाल तक यहां के भू-स्वामी थे। इस नगर में कोई प्राचीन अवशेष नहीं हैं, जिनका उल्लेख किया जा सके। अकबर के समय में यह सरकार खैराबाद[1] के बाइस महालों अथवा परगनों में सम्मिलित था और इसे 'छतयापुर' (अथवा छितियापुर) कहा जाता था। यह स्पष्ट नहीं है कि यह शब्द सीतापुर का ही अभ्रंश है अथवा नहीं। यद्यपि इस जिले के अनपढ़ ग्रामीण अभी तक 'सीता' को 'छीता' कह कर पुकारते हैं।

स्थिति, सीमाएं, क्षेत्रफल और जनसंख्या

सीतापुर का जिला उत्तर प्रदेश के लखनऊ प्रभाग (डिवीजन) का एक अंश है और गोमती-घाघरा दोआब का एक भाग है, जो उत्तर में 27° 6′ और 27° 54′ अक्षांश और पूर्व में 80° 18′ तथा 81° 24′ देशान्तर रेखाओं के बीच पड़ता है। इसकी आकृति एक स्थूल समानान्तर चतुर्भुज के समान है और यह उत्तर से दक्षिण में लगभग पचपन मील और पूर्व से पश्चिम में प्रायः सत्तर मील तक फैला हुआ है। यह पश्चिम और दक्षिण की ओर गोमती नदी से घिरा हुआ है, जो उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हुई इस जिले को हरदोई जिले से पृथक् करती है; पूर्व की ओर घाघरा नदी है जो इसे बहराइच के जिले से अलग कर देती है; उत्तर की ओर खीरी का जिला पड़ता है, इस ओर उत्तर-पूर्व की दिशा में दहावर नदी बहती है और इससे उस दिशा की सीमा बनती है। इसके अलावा यहां कोई अन्य प्राकृतिक सीमा नहीं है। इस जिले के दक्षिण में लखनऊ और बाराबंकी के जिले हैं, ये जिले भी गोमती और घाघरा के ही बीच स्थित हैं।

क्षेत्रफल :—तहसील क्षेत्रफलों के जिला अभिलेखों के आधार पर की गई गणना के अनुसार इस जिले का क्षेत्रफल 2,207 वर्गमील अथवा 14,12,148 एकड़ है तथा सर्वे आफ इंडिया के अनुसार 2,208 वर्गमील है।[2] घाघरा के प्रवाह में परिवर्तन हो जाने के फलस्वरूप, 6 गांव (बागेसती, पुरैना, शुकुल पुरवा, सोनरख, गौलक कोंडर और आराजी कोंडर चौबह) जिनका क्षेत्रफल 17,042 एकड़ है, जुलाई 1956 में, बहराइच जिले की कैसरगंज तहसील से इस जिले की सिधौली तहसील को हस्तान्तरित कर दिये गये। 30 जून, 1958 को समाप्त होने वाले सन् 1365 फसली के क्षेत्र विवरण (मिलान खसरा) के अनुसार इस जिले का क्षेत्रफल 2233.109 वर्गमील अथवा 14,29,190 एकड़ है और इसमें वन विभाग के अधीन वनों का क्षेत्रफल सम्मिलित नहीं है।

जन संख्या :—इस जिले की कुल जन संख्या (1951 की जनगणना के अनुसार) 13,80,472 है, जिसमें से ग्रामों की जनसंख्या 12,76,210 एवं नगरों की जनसंख्या 1,04,262 है। समग्र रूप से जिले की जनसंख्या का घनत्व 625 व्यक्ति प्रति वर्ग मील है, जो कि लखनऊ के पड़ोसी जिले से बहुत ही कम है, क्योंकि लखनऊ में यह घनत्व प्रति वर्गमील 1,156 व्यक्तियों का है। जिले में 2,328 गांव, 7,673 पुरवे (hamlets) और सात कस्बे हैं।

प्रशासकीय इकाई के रूप में जिले का इतिहास

इस जिले के प्रशासकीय इतिहास के बारे में, अकबर के समय के पूर्व का कोई अभिलेख नहीं मिलता है। उसके समय में यह क्षेत्र सूबा अवध की चार सरकारों का एक अंग था। इसका अधिकांश खैराबाद की सरकार के अन्तर्गत था, दक्षिण-पूर्व का एक अंश लखनऊ सरकार की सीमा में आता था,

---

[1] अबुल फजल: आईने-अकबरी, कर्नल जैरेट कृत अंग्रेजी अनुवाद, खण्ड 2 (द्वितीय संस्करण), कलकत्ता, 1949, पृष्ठ 188।

[2] भारत की जनगणना, 1951—डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हैन्डबुक, उत्तर प्रदेश, सीतापुर जिला, (इलाहाबाद, 1955) पृष्ठ 13।